विदेशों में हिंदी भाषा और संस्कृति के शिक्षण की नई पद्धतियाँ: संभावनाएं और चुनौतियाँ

डॉ. ज्योति शर्मा

सह आचार्य

शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली, भारत

भाषा और संस्कृति का अटूट सम्बन्ध है। भाषा संस्कृति के बीच से पैदा होती है और संस्कृति की वाहिका भाषा है। भाषा और संस्कृति के बीच का यह पुल बहुत पुराना है, लेकिन बदलते समय, समाज, सन्दर्भ और संसाधनों के साथ भाषा के इस पुल को नई तकनीकों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी भाषा के सन्दर्भ में यह बात पूरी तरह से लागू होती है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन अंतरराष्ट्रीय धरातल पर विस्तृत हो रहा है। ऐसे में हिंदी भाषा शिक्षण को नई पद्धतियों, नई तकनीकों से जोड़ना अत्यंत अनिवार्य है।

विदेशों में हिंदी शिक्षण के दौरान मैंने हिंदी भाषा और संस्कृति के इन नई पद्धतियों के साथ जुड़ाव से जुड़ी संभावनाओं और चुनौतियों को महसूस किया।

क्रोएशिया के ज़ाग्रेब विश्विद्यालय का इंडोलॉजी विभाग तक़रीबन पचास साल पुराना है और लगातार यहाँ हिंदी भाषा और संस्कृति का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। यहाँ विद्यार्थियों से संवाद करते हुए महसूस हुआ कि हिंदी भाषा और हिंदुस्तान में उनकी गहरी रुचि है। इनमें से कुछ हिंदुस्तान घूम आये हैं और कुछ अभी भी जाने के आकांक्षी हैं। ऐसे में हिंदी कक्षाओं में नई तकनीक के साथ जोड़कर भाषा को पढ़ना-पढ़ाना न केवल इन विद्यार्थियों के लिए भाषा और उससे जुड़े सांस्कृतिक अर्थों को स्पष्ट बनाता है, अपितु दिलचस्प भी बनाता है। क्रोएशिया की कक्षाओं में जब हम हिंदी भाषा और साहित्य पढ़ते हुए गूगल या यूट्यूब की मदद से बात साझा करते हैं तो, विद्यार्थियों के लिए भाषा समझने के साथ- साथ उसके

सांस्कृतिक पाठ भी खुलते है। उदाहरण के रूप में कई स्थानों, वस्तुओं और व्यक्तियों के बारे में बात करते हुए तकनीक की मदद न केवल समझने की राह आसान बनाते हैं अपितु जिज्ञासा भी बढ़ाते हैं और विद्यार्थी इन नए सांस्कृतिक पाठों को समझने के लिए हिंदी में अनायास ही बातचीत आरम्भ करते हैं। हालाँकि तकनीक आधारित हिंदी शिक्षण में प्रमाणिकता एक बड़ी चुनौती है लेकिन फिर भी कहना न होगा कि यूट्यूब , गूगल , ब्लॉग लेखन और तमाम अन्य तकनीकी माध्यमों से हिंदी शिक्षण विदेशों में एक नए अर्थ रच रहा है। मेरे अनुभव क्षेत्र में क्रोएशिया का हिंदी शिक्षण ताना-बाना अभी निरंतर बुना जा रहा है , लेकिन यहाँ आपके साथ इस विषय के सन्दर्भ में लोसान विश्विद्यालय, स्विट्ज़रलैंड के उदाहरण प्रस्तुत कर रही हूँ।

पिछले दिनों मुझे स्विट्जरलैण्ड के लोसान विश्वविद्यालय में पढ़ाने का मौका मिला। विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में लोसान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से जब मेरी मुलाकात हुई तो मेरे लिए बड़ी चुनौती थी हिन्दी को एक रोचक अंदाज में उन छात्रों को सिखाना। उनमें से अधिकांशतः फ्रेंच भाषी थे, कुछ इटेलियन या जर्मन भाषी। लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण बात थी वह यह कि सभी विद्यार्थी हिन्दी और हिन्दुस्तान के प्रति एक गहरा लगाव रखते हैं।

बहरहाल,यूरोपीय देशों में सबसे सुन्दर सुव्यवस्थित और पृथ्वी के स्वर्ग कहे जाने वाले स्विट्ज़रलैंड के जिनेवा शहर में उतरते के साथ ही मैंने हिंदी की खुशबू को महसूस किया। जब मेरी नज़र जिनेवा के एक सिनेमाघर पर लगे लगान फिल्म के पोस्टर पर पड़ी, तो मैं हैरान रह गई। मुझे पता चला कि इस छोटे से खूबसूरत देश में हिंदी और हिंदुस्तान को जानने और समझने की ललक है।

मेरी नियुक्ति स्विट्ज़रलैंड के लोसान में भारत सरकार, सांस्कृतिक संबद्ध परिषद् द्वारा टैगोर चेयर प्रतिनिधि के रूप में हुई। हिंदी के प्रति स्विट्ज़रलैंड में यह सकारात्मक रवैया मेरे लिए एक सुखद अनुभव था। ऐसा लगा मानों हिंदी की उपस्थिति ने मीलों की दूरी को मिनटों में पाट दिया हो। घंटों की यात्रायी थकान जैसे चुटकियों में इस उत्साह के आगे फुर्र हो गई हो।

फरवरी के महीने की यूरोप की कड़कड़ाती ठंड में भी मैंने आत्मीयता की गर्माहट को महसूस किया। लोसान विश्वविद्यालय में प्रमुख प्रोफेसर माया बर्गर की जुबान से हिंदी सुन मैं मंत्रमुग्ध हो गई। उनकी सहायता, समय-समय पर दिए गए सुझावों और साथ ने लोसान में हिंदी शिक्षण की मेरी राह को न केवल सहज बनाया बल्कि अर्थवान बनाने में भी योगदान दिया

लोसान में हिंदी शिक्षण के लिए अपनी यात्रा शुरू करने से पहले मन में कई सवाल थे। जैसे छात्र हिंदी में कुछ समझते भी होंगे, उनकी दिलचस्पी हिंदी भाषा में होगी या कैसे जगाई जाएगी? साथ ही स्विट्ज़रलैंड के मौसम को लेकर भी एक भय था। दिल्ली के मौसम का आदी मेरा शरीर स्विट्ज़रलैंड के बर्फीले माहौल में कैसे प्रतिक्रिया करेगा?

बहरहाल तमाम सवालों को समेट एक उम्मीद, उत्साह और उत्सुकता के साथ अब मैं स्विट्ज़रलैंड के लोसान शहर में स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ लोसान के डिपार्टमेंट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज़ में टैगोर चेयर, विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में उपस्थित थी। यहाँ पर प्रमुख प्रोफेसर माया बर्गर जी की मुझसे पहली शर्त थी कि विद्यार्थियों के साथ केवल हिंदी में बात करनी है।

एक अन्य सहायक प्राध्यापक निकोला पोज़ा जी ने मुझे फ्रेंच-हिंदी में तैयार कुछ शब्दावली पाठ दिए। इन पाठों का प्रयोग कर मुझे अपनी कक्षा में छात्रों के साथ हिंदी में संवाद स्थापित करने थे। किंतु कक्षा में प्रवेश करने पर पता चला कि मेरे सामने प्रश्न और चुनौतियाँ कई थे। पहला प्रश्न यह था कि छात्र कई भाषायी पृष्ठभूमियों से थे। मसलन, कुछ फ्रेंच मूल के थे, कुछ जर्मन, कुछ इटेलियन और एक-दो अमेरिकन भी। दूसरी बड़ी चुनौती थी छात्र कक्षाओं के साथ-साथ पार्ट टाइम काम किया करते थे, अपने जीवनयापन के लिए। भारत की तरह एकमुश्त पढ़ते ही नहीं थे, जैसे यहाँ कुछ-एक को छोड़ दें तो कक्षाओं में मिलने वाले विद्यार्थी केवल पढ़ रहे हैं तो पढ़ ही रहे हैं। तीसरी चुनौती- ये छात्र केवल हिंदी नहीं, कई अन्य विषय जैसे- धर्म, इतिहास, भाषा, राजनीति की कक्षाएँ अलग-अलग शहरों में बने विश्वविद्यालयों में लेने जाते थे।

इन तमाम चुनौतियों और प्रश्नों के बीच जो एक सबसे बड़ा समाधान का आधार था वह थी इन विद्यार्थियों की मेहनतकश प्रवृत्ति, समय का सम्मान और हिंदी और हिंदुस्तान के प्रति आकर्षण। बस फिर क्या था! इन्हीं सकारात्मक बिंदुओं को पकड़कर हमने कक्षाओं में हिंदी शिक्षण की यात्रा शुरू की।

पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन (PPT), फिल्मों, राजभाषा हिंदी की वेबसाइट, फिल्मी गीतों, यू-ट्यूब के साथ तैयार की गई कक्षाओं की सामग्री जैसे-जैसे कक्षा में खुलने लगी वैसे-वैसे हिंदी शिक्षण की राह दिलचस्प और सहज बनती चली गई। इन विद्यार्थियों के साथ हिंदी और हिंदुस्तान पर बात करते-करते जैसे-जैसे समय बीतता गया लगा जैसे बाहर सफेद बर्फ की चादर को चीरता सूर्य मौसम को माकूल बना रहा था, वैसे ही कक्षाओं के भीतर भी आत्मीयता के इन्द्रधनुषी रंग बिखरते जा रहे थे।

हिन्दी फिल्मों और यूट्यूब पर उपलब्ध हिन्दी वीडियोस से हिन्दी के बहुवचन रूपों को सिखाने के लिए जब मैंने 'एक चिड़िया अनेक चिड़िया' का सहारा लिया तो छात्रों को बहुवचन के साथ-साथ चिड़िया, गिलहरी, दाना आदि शब्द सीखते देर नहीं लगी। छात्रों ने खुद ही इन शब्दों के प्रयोग कर नए-नए वाक्य बनाने शुरू कर दिए। फिर एक-एक वाक्य जोड़ इन विषयों पर अपने अनुभव साझा करने शुरू किए। कुछ विद्यार्थियों ने तो अलग-अलग विषय पर अपने-अपने अनुभव के अनुसार पी.पी.टी. भी बनाई और प्रस्तुत की। फिर हमारा हौंसला जैसे हिंदी को पढ़ने और पढ़ाने के प्रति बुलन्द हो गया। तकनीक के रास्ते आसान बनी राह ने जैसे हिंदी पढ़ने के हमारे इरादों को नए पंख दे दिए। हमने 'आइ.एम.कलाम', 'जोध अकबर', 'लगे रहो मुन्नाभाई' फिल्में साथ-साथ देखीं और उन पर बात की।

फिर हमारा हौंसला जैसे हिंदी को पढ़ने और पढ़ाने के प्रति बुलन्द हो गया। तकनीक के रास्ते आसान बनी राह ने जैसे हिंदी पढ़ने के हमारे इरादों को नए पंख दे दिए। हमने 'आइ.एम.कलाम', 'जोधा अकबर', 'लगे रहो मुन्नाभाई' फिल्में साथ-साथ देखीं और उन पर बात की।

हिंदी भाषा शिक्षण और तकनीकी तालमेल का प्रयोग करते हुए भारत सरकार ने भी कई वेबसाइट्स बनाई हैं। जिनमें से एक है- www.rajbhasha.nic.in

इस साइट पर लॉगिन करने से आपको तीन स्तर पर भाषा सीखने को मिलेगी-

1. प्रबोध
2. प्रवीण
3. प्राज्ञ

प्रबोध में बिल्कुल छोटे मॉडल्स हैं। वर्ण, शब्द और पिफर छोटे वाक्य। जैसे- राम ..... जाता है। सीता ..... खाती है।

प्रवीण में और फिर प्राज्ञ में भाषा के प्रयोगों का स्तर बढ़ता जाता है। यहां आप सुनकर भी हिंदी सीख सकते हैं। आपके उच्चारण को सही करने के लिए सही उच्चारण को। जैसे-जैसे आप प्रबोध से प्रवीण और प्राज्ञ स्तर की ओर बढ़ते हैं। आपका हिंदी भाषा संबंधी ज्ञान भी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ होता जाएगा।

स्विट्ज़रलैंड यूरोप का एक ऐसा देश है जो क्षेत्रफल की दृष्टि से लगभग उत्तर प्रदेश से भी छोटा है। यह एक बेहद सुव्यवस्थित, सुन्दर और मनोरम प्राकृतिक दृश्यों से सजा खूबसूरत देश है। लगता है जैसे ईश्वर ने इस देश में जो प्राकृतिक सुंदरता का वरदान दिया है मनुष्य ने अपने भरपूर प्रयासों से उसे संजोया और पिरोया हुआ है। मैं तो कहूँगी कि यह देश मुझे प्रकृति और मनुष्य के अद्भुत सामंजस्य और अब तक प्रयासों से सजा सँवरा पृथ्वी का एक छोटा-सा स्वर्ग प्रतीत हुआ। हालाँकि शुरूआती दिनों में बर्फीली हवाओं के कारण बाहर का मौन और मार्गों पर मनुष्यों की कमी मुझ भारतीय को कुछ अखरी। दिल्ली की मेट्रो और मॉलों और मार्किटों में मनुष्य की भीड़ देखने वाले हम भारतीयों के लिए इतना चुप्पा माहौल एकाएक पचाने वाला नहीं था। किंतु यह चुप्पा माहौल भीतर के तारों को छेड़ने का अवसर था, अपने

अध्ययन-अध्यापन में रमने का एक मौका था और आध्यात्मिक तेवर वाले के मौन में संगीत की अनुभूति का एहसास था।

धीरे-धीरे जब मैंने इस देश के मौन को पढ़ना सीखा तो पता लगा कि यह छोटा-सा देश ऐसे ही विश्व में अपना नाम नहीं रखता या कहें कि यूँ ही प्रगतिशील देशों के क्रम में शुमार नहीं है। सतत् काम करने की बेचैनी, समय पर काम करने की प्रतिबद्धता और पर्फेक्शन के साथ हर काम को अंजाम देने का अंदाज इसे विश्व में प्रसिद्धि दिलाए हुए है।

अपने भीतर के राग, हिंदी के प्रति यहाँ के छात्रों के अनुराग और सही समय के भाग को पहचानने के बाद हमनें मिलकर तय किया कि 'एक शाम हिंदी के नाम' यूनिवर्सिटी ऑफ लोसान के कैम्पस में मनाई जाए।

इस कार्यक्रम के तहत लगभग दो महीने पूर्व 'एक बूँद' नाम से नाटक की एक स्क्रिप्ट लिखी गई। पात्र चुने गए। शुरू में हर हफ्ते, फिर हफ्ते में दो दिन और फिर हफ्ते में तीन या चार दिन भी कक्षाओं के बाद रिहर्सल का दौर शुरू हुआ। दफ्तर और घरों के बाहर बगीचों में रंग-बिरंगे ट्यूलिप खिल आए थे और यहाँ हमारे प्रयासों और रिहर्सलों में हिंदी के नए-नए रंग खिल रहे थे। दो साँझी संस्कृतियों के मेल से बने अद्भुत रंग। विद्यार्थियों ने कक्षाओं, अपने दैनिक कामों कार्यालयी कामों के बीच से समय चुराकर इस रिहर्सल को वक्त दिया। अब उनको हिंदी लुभा रही थी। जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए लाख बाधाओं के बाद भी पहुँचता है, वैसे ही ये विद्यार्थी तमाम दैनिक चुनौतियों के बावजूद हिंदी में इस नाटक को तैयार कर पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रस्तुत करने के लिए कटिबद्ध थे।

कुछ विद्यार्थियों ने अपनी भारत यात्रा पर पॉवर पॉइंट प्रस्तुति तैयार की और कुछ विद्यार्थियों ने अपने मनपसंद कवियों की कविताएँ कंठस्थ की। नाटक की सामग्री विद्यार्थियों, अध्यापकों के घरों से इकट्ठी की गई. बुर्का, कुर्ते, धोती, टोपी, चूल्हा, तवा आ जुटा। देखते ही देखते समय बीता और वो शाम आ गई जिसका सबको इंतजार था। शुरूआत 'भारत यात्रा पर प्रस्तुति से हुई। छात्रों ने कविताएं सुनाईं और फिर नाटक की प्रस्तुति हुई।

संगीत, अभिनय और अंकों में सजा यह नाटक जब खचाखच भरे सभागार में अंक दर अंक मंच पर उतरता जा रहा था तो उसे मंच के एक कोने पर खड़ी देख मैं ऐसा ही सुख पा रही थी जैसे नवजात शिशु की माँ अपने शिशु पर बलिहारी जाती है। छात्रों के मुख से हिंदी के सही उच्चारण और अभिनयपूर्ण वाक्य सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए। तालियों की गड़गड़ाहट ने साबित कर दिया कि हिंदी लोसान को लुभाने में पूरी तरह सफल हुई है। इसके पश्चात् विद्यार्थियों और अध्यापकों द्वारा तैयार किए भारतीय-यूरोपीय व्यंजनों का आनंद सभी ने उठाया।

बर्न स्थित भारतीय दूतावास तक जब 'हिंदी की शाम' की सफलता की गूंज पहुँची तो अगले सत्र में संयुक्त रूप से विशेष करने का प्रस्ताव और सुझाव भी मिला। भारत के चीफ ऑफ मिशन से एक भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य के कार्यक्रम में प्यूयी (स्विट्ज़रलैंड) में मुलाकात हुई। उन्होंने भी हौंसलाअफजायी की। यूनिल पुस्तकालय के लिए हिंदी की पुस्तकों की सूची बनाई गई। साथ ही भविष्य की रूपरेखा के रूप में भारत-स्विट्ज़रलैंड संबंधों में हिंदी की भूमिका और महत्त्व को रेखांकित करने के खाके भी खींचे गए।

समय तो जैसे पंख लगाकर उड़ रहा था। देखते ही देखते एक सत्र का अल्पकाल कई सारी यादों, गतिविधियों और हिंदी शिक्षण की नई प्रविधियों को समझने-संवारने के साथ बीत गया। हम समय को मुट्ठी में पकड़ना चाहते थे और वह रेत की तरह बीत रहा था।

बहरहाल, समय तो बीत रहा है, और बीत ही जाता है, लेकिन लोसान में बिताए समय ने सिद्ध कर दिया स्विट्ज़रलैंड में भारतीय संस्कारों और भारत की भाषा हिंदी के प्रति एक विशेष आदर, स्नेह और आकर्षण है।

विद्यार्थी प्रतिवर्ष भारत को समझने के लिए भारत के अलग-अलग राज्यों में आते हैं। अपने देश की तकनीकी सुविधाओं और विकास के रूप में हिंदुस्तानी राग-रंगों और संस्कारों को भरना चाहते हैं। हमने मिल-जुलकर एक ब्लॉग लेखन का प्रावधान भी किया। जहाँ ये शुरू

हुई रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रवाहित होती रहें और दो देशों के आपसी संबंधों का पुल बनी हिंदी अपना काम निरंतर करती रहे।

गत वर्ष स्विट्ज़रलैंड में हिंदी की इस विकास यात्रा की कड़ी का और अधिक विकास हुआ . हमने छात्रों की रुचि विकसित कर उन्हें सही उच्चारण के लिए प्रेरित किया , ऑडियो लैब में काम किया जहाँ उन्होंने भाषा के सही उच्चारण सीखे . शब्दावली सीखने के लिए एप बनाए. साथ ही कई - पाठ तैयार किए. हिन्दी सिनेमा क्लब बनाया जहाँ नियमित रूप से माह में एक बार विद्यार्थी-शिक्षक हिन्दी की फिल्म देखते हैं और हिन्दी में उस पर चर्चा करते हैं. कई विद्यार्थी हिन्दी, हिन्दुस्तान और हमारी संस्कृति पर शोध के लिए प्रेरित और कार्यरत हुए हैं. हिन्दी भाषा स्विट्ज़रलैंड में अब केवल भाषा नहीं है यह लोगों के दिलों पर राज करती है। भारत के भोजन, नृत्य और वस्त्रों ने इन्हें प्रभावित किया है। कई स्विज़ लोगों ने तो भारतीय परिधान, भोजन और जीवन शैली को अपने जीवन का स्थायी हिस्सा बना लिया है।

भारतीय योग, दर्शन और शास्त्रों में लोगों की गहरी रूचि बढ़ रही है. हाल ही में कई शास्त्रों , उपनिषदों और महत्वपूर्ण पुस्तकों के हिन्दी-संस्कृत से फ्रेंच-जर्मन में अनुवाद हुए हैं और हो रहे हैं। भारत की पाककला, योगासन और आयुर्वेद तथा मसाज थेरेपी को बड़ी मात्रा में लोग सीख रहे हैं और इन्हें अपने पेशे के रुप में अपना रहे हैं।

स्विट्ज़रलैंड में हिंदी अध्यापन करते हुए मैंने महसूस किया है कि विश्व स्तर पर विस्तृत होती हिन्दी के सकारात्मक और सही विस्तार के लिए हम हिन्दी सेवियों और हिन्दुस्तानियों की ज़िम्मेदारी बढ़ी है क्योंकि हिन्दी केवल भाषा नहीं संस्कृति की वाहिका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. गगनांचल पत्रिका, वर्ष- 40, अंक:1-2, जनवरी - अप्रैल 2017, ISSN - 0971-1430

2.पंकज पत्रिका, मॉरिशस, अंक- 54, अगस्त 2018, ISSN- 1694-3503

3. विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरिशस 2017, ISSN- 1694-2477